साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 10, अंक : 21 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 1 जनवरी 2025 से 7 जनवरी 2025 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

महज पांच फीसदी शहरों में साफ है हवा, हापुड-पटना सहित 67 फीसदी में चिंताजनक हैं हालात

नई दिल्ली। ताजा रुझानों के मुताबिक आइजोल सहित देश के महज पांच फीसदी शहरों में हवा साफ है। इनमें हुबली, मदिकेरी, ऋषिकेश, शिवमोगा, सिलचर, तंजावुर, तिरुनेलवेली, विजयपुरा आदि 12 शहर शामिल हैं। कल से देखें तो देश में साफ हवा वाले शहरों में नौ फीसदी का इजाफा हुआ है।

वहीं दूसरी तरफ देश में बर्नीहाट की हवा सबसे ज्यादा खराब है, जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक 392 दर्ज किया गया। प्रदूषण के मामले में आज हापुड (340) दूसरे, जबकि दिल्ली (335) तीसरी स्थान पर है। वहीं पटना (316) चौथे, जबकि मुजफ्फरपुर (306) पांचवें स्थान पर रहा। इन सभी पांचों शहरों में वायु गुणवत्ता %बेहद खराब% बनी हुई है। मतलब की वहां हवा में घुला जहर लोगों को बेहद बीमार बना देने के लिए काफी है।

ऐसे में यदि देश के सबसे प्रदूषित शहर बर्नीहाट की तुलना आइजोल से करें तो वहां प्रदूषण का स्तर 17 गुणा ज्यादा है। प्रदूषण के मामले में आज हाजीपुर छठ स्थान पर रहा, जहां वायु गुणवत्ता सूचकांक 295 दर्ज किया गया। मतलब की वहां वायु गुणवत्ता %खराब% बनी हुई है। हाजीपुर की तरह ही देश के छोटे बड़े 36 अन्य शहरों में वायु गुणवत्ता का स्तर %खराब% बना हुआ है। इन शहरों में अहमदनगर, अररिया, आसनसोल, औरंगाबाद (बिहार), बालासोर, बैरकपुर, भागलपुर, भिवाड़ी, भुवनेश्वर, बीकानेर, बूंदी, चंडीगढ़, चरखी दादरी,

छपरा, चुरू, धनबाद, गाजियाबाद, गुम्मिडिपूंडी, गुवाहाटी, हाजीपुर, हल्दिया, हावड़ा, जोधपुर, कटिहार, कुंजेमुरा, मंडीदीप, नागौर, नलबाड़ी, नांदेड़, नोएडा, पाली, पिंपरी-चिंचवाड, राजमहेंद्रवरम, सासाराम, सीकर, तालचेर, विशाखापत्तनम शामिल हैं। कल के मुकाबले देखें तो देश में %खराब% हवा वाले शहरों की गिनती में करीब तीन फीसदी का इजाफा हुआ है। देश में आगरा सहित 66 शहरों में वायु गुणवत्ता का स्तर संतोषजनक दर्ज किया गया। इन शहरों में दौसा, दावनगेरे, धारवाड़, धुले, डूंगरपुर, फिरोजाबाद, हसन, हैदराबाद, जालंधर, झांसी, कडपा, कलबुर्गी, कन्नूर, कानपुर, करौली, करूर, कारवार, कोहिमा, कोलार, कोल्हापुर, कोप्पल, लुधियाना, मदुरै, मैहर, मंगुराहा, मैसूर आदि शहर शामिल हैं। चिंता की बात यह है कि देश में कल से संतोषजनक हवा वाले शहरों की संख्या में सात फीसदी की गिरावट आई है। वहीं दूसरी तरफ देश में अहमदाबाद सहित 118 शहरों में वायु गुणवत्ता मध्यम स्तर में बनी हुई है।

स्वामी विवेकानंद के जन्म-दिवस 12 जनवरी को होगा सामूहिक सूर्य-नमस्कार

स्कूल शिक्षा विभाग ने जारी किये निर्देश

इंदौर स्वामी विवेकानंद के जन्म-दिवस 12 जनवरी को प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी युवा दिवस के रूप में मनाया जायेगा । युवा दिवस के मौके पर विद्यालयों, महाविद्यालयों और शिक्षण संस्थाओं में सामूहिक सूर्य-नमस्कार के आयोजन किये जायेंगे। सामूहिक सूर्य-नमस्कार के साथ स्वामी विवेकानंद पर केन्द्रित प्रेरणादायी शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होंगे।

स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा इस संबंध में दिशा-निर्देश जारी किये गये हैं। सामूहिक सूर्य-नमस्कार और इससे जुड़े कार्यक्रमों में स्वयंसेवी संगठनों और आम लोगों की भागीदारी भी सुनिश्चित करने के लिये कहा गया है। विभाग द्वारा जारी निर्देशों में कहा गया है कि प्रदेश की समस्त विद्यालयीन संस्थाओं में 12 जनवरी को प्रातः 9 से प्रातः 10:30 बजे तक सामूहिक सूर्य-नमस्कार का आयोजन हो। कार्यक्रम में राष्ट्रीय गीत वंदे-मातरम और मध्यप्रदेश गान का सामूहिक गायन होगा। इसी दौरान मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव का रेडियो पर संदेश प्रसारित होगा। सामूहिक सूर्य-नमस्कार समस्त शिक्षण संस्थाओं में एक साथ, एक संकेत पर किया जायेगा। कार्यक्रम के आयोजन के संबंध में जिला कलेक्टर की अध्यक्षता में समिति का गठन किये जाने के निर्देश दिये गये हैं। शिक्षण संस्थाओं में होने वाले सामूहिक सूर्य-नमस्कार में मंत्रीगण, सांसद, महापौर, अध्यक्ष जिला पंचायत, विधायक, अध्यक्ष नगर पालिका एवं स्थानीय जन-प्रतिनिधि भी शामिल होंगे। सामूहिक सूर्य-नमस्कार में कक्षा-6वीं से 12वीं तक के विद्यार्थी शामिल होंगे। सामूहिक सूर्य-नमस्कार में शामिल विद्यार्थियों को योग और स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने के महत्व के बारे में भी बताया जायेगा।

महाकुंभ –जानिए 45 करोड़ श्रद्धालुओं के लिए कैसे साफ होगी एक नदी?

दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजन महाकुंभ उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले में 13 फरवरी से शुरू हो जाएगा। सरकार का मानना है कि इस बार मेले में श्रद्धालुओं की संख्या करीब 45 करोड़ की होगी। श्रद्धा के कारण होने वाली इतनी बड़ी मानवीय जुटान का प्रबंधन एक हैरानी का विषय है लेकिन उससे भी बड़ी हैरानी यह होगी कि एक नदी को इतनी बड़ी आबादी के लिए पहले साफ किया जाएगा।

गंगा नदी में जैविक और रासायनिक प्रदूषण को कम करने के लिए यह प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। हालांकि, श्रद्धालुओं के मन में यह आशंका भी है कि क्या इस महाआयोजन में गंगा में डुबकी स्वच्छ जल में लगेगी?

नेशनल क्लीन गंगा मिशन के पूर्व महानिदेशक राजीव रंजन मिश्रा के मुताबिक एक नदी जिसमें जल प्रवाह बेहतर हो, वह खुद ही बहुत हद तक साफ हो जाती है। हालांकि, नदी को साफ और स्वस्थ्य होने के लिए उसमें रासायनिक प्रदूषण के अलावा जैव विविधता का बचाव और डिस्चार्ज होने वाले प्रवाह को साफ करने वाले मशीनरी की बेहतर कार्यप्रणाली बहुत जरूरी है।

इसके लिए एक आकलन जरूरी है।

सरकार के एक हलफनामे के आधार पर इस बार मेला क्षेत्र में करीब 50 लाख कल्पवासी या तीर्थयात्री स्थायी तौर पर रहेंगे। इस एक महीने के महाआयोजन में चार प्रमुख स्नान होंगे। इनमें हर प्रमुख स्नान वाले दिन 5 करोड़ लोगों के जमघट की संभावना है।

इसका मतलब होगा कि जिस दिन 5 करोड़ लोग मेला क्षेत्र में होंगे उस दिन 16.44 मिलियन लीटर प्रति दिन (एमएलडी) मल कीचड़ पैदा होगा। यानी हर दिन शहर में पैदा होने वाले सीवेज में मेला के दौरान यह अतिरिक्त सीवेज होगा। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) में उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से दिए गए एक हलफनामे के मुताबिक प्रयागराज में हर दिन 471.93 एमएलडी सीवेज पैदा होता है।

इतने सीवेज का प्रबंध सही से नहीं किया जा रहा था और नवंबर तक करीब 128 एमएलडी सीवेज सीधा गंगा में गिर रहा था। जब महाकुंभ नजदीक आया तो एनजीटी की सख्ती के बाद अब सीवेज प्रदूषण के बड़े हिस्से के उपचार की बात हलफनामे में कही गई है।

दिसंबर में एनजीटी में दिए गए यूपी सरकार के ताजा हलफनामे के मुताबिक कुल 471.92 एमएलडी में बड़ा हिस्सा यानी 293 एमएलडी गंगा यमुना से जुड़े कुल 81 नालों में पहुंचता है और अतिरिक्त 178.31 एमएलडी सीवरेज नेटवर्क में जाता है जो कि 390 एमएलडी अधिकतम क्षमता वाले 10 एसटीपी से जुड़े हुए हैं। 81 नालों में 37 नालों को एसटीपी से जोड़ा जा चुका है, इन 37 नालों में जाने वाले 216.17 एमएलडी सीवरेज का उपचार किया जा रहा है। वहीं, 44 नाले ऐसे हैं जिनमें 77.42 एमएलडी सीवेज जा रहा है, जिसके उपचार का वादा किया गया है, हालांकि असल स्थिति अभी तक साफ नहीं है। अब यहां ध्यान देने लायक बात यह है कि सरकार ने कहा है कि महाकुंभ के दौरान जो अतिरिक्त सीवेज पैदा होगा वह 10 फीसदी अधिक होगा। यानी कुल 81 नालों में जाना वाला 216.17 एमएलडी सीवेज बढ़कर 237 एमएलडी हो जाएगा। इसे भी एसटीपी की तरफ ही डायवर्ट किया जाएगा। एसटीपी की अधिकतम क्षमता 390 एमएलडी है। ऐसे में वह सीवरेज नेटवर्क से आने वाले और नालों से आने वाले कुल मल कीचड़ एसटीपी की क्षमता से 43 एमएलडी अधिक होगा। अब यह अभी तक अनुत्तरित है कि इस 43 एमएलडी को कैसे उपचारित किया जाएगा। हालांकि, सीवेज का एक बड़ा हिस्सा उपचारित होगा।

अब उन 44 नालों के बारे में गौर करिए जिन्हें एसटीपी से जोड़ा नहीं जा सका है। इन 44 नालों में प्रयागराज का कुल 77.42 एमएलडी सीवेज जाता है। फिलहाल सरकार ने दावा किया है कि वह 22 नालों से आने वाले 60.80 एमएलडी सीवेज को ऑनसाइट उपचारित कर लेगी। जबकि अन्य 22 नालों में 17 नालों से आने वाले 15.23 एमएलडी को भी जल्द ही एसटीपी से जोड़ देगी। अब इन 44 अनटैप्ड नालों में महाकुंभ के दौरान 10 फीसदी सीवेज की बढोत्तरी होगी जो कि कुल 85.16 एमएलडी होगा। ऐसे में करीब 9 एमएलडी सीवेज कैसे उपचारित होगा, वह यहां स्पष्ट नहीं है।

सरकार का दावा है कि मौजूदा एसटीपी पर 87 प्रतिशत का उपचार किया जाएगा और ऑनसाइट इलाज के जरिए–13 फीसदी सीवेज का उपचार किया जाएगा। बहरहाल सीवेज प्रबंधन एक बड़ी चुनौती है, आंकड़े यह बताते हैं कि सरकार यदि दावों को हकीकत में नहीं बदलती है तो प्रतिदिन 50 एमएलडी से अधिक सीवेज बिना उपचार के गंगा में जाएगा और श्रद्धालुओं को एक अस्वच्छ जल में डुबकी लगाने के लिए मजबूर होना होगा। दूसरा पहलू है कि नदी में प्रवाह (ई–फ्लो) जब तक बेहतर नहीं होगा तब तक वह खुद से प्रदूषण को साफ नहीं कर पाएगी। खासतौर से बॉयोलॉजिकल ऑक्सीजन डिमांड (बीओडी) और डिजॉल्व ऑक्सीजन (डीओ) व फीकल कोलिफॉर्म के मानकों का वांछित परिणाम नहीं हासिल होगा। महाकुंभ के दौरान नदी में जलस्तर बढाने के लिए विभिन्न बैराज से अधिक पानी डिस्चार्ज किया जाता है। यहां तक कि कृषि के लिए रिजर्व पानी को भी डायवर्ट कर दिया गया है। विभिन्न मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक 15 दिसंबर से नदी के जल स्तर को बढ़ाने के लिए टिहरी बांध ने गंगा में प्रतिदिन 2,000 क्यूसेक पानी छोड़ना शुरू कर दिया है। अधिकारियों के अनुसार इस बीच नरोरा बैराज से डाउनस्ट्रीम में 24 दिसंबर से प्रतिदिन 5,000 क्यूसेक पानी प्रयागराज की ओर छोड़ा जा रहा है। यह बढ़ी हुई जलापूर्ति 26 फरवरी तक जारी रहेगी। वहीं, कानपुर बैराज गंगा में काफी मात्रा में पानी छोड़ रहा है। 19 दिसंबर को बैराज से 4,124 क्यूसेक पानी छोड़ा गया, जबकि 18 दिसंबर को 5,105 क्यूसेक पानी छोड़ा गया। 1 दिसंबर को सबसे अधिक 13,865 क्यूसेक पानी छोड़ा गया था। पानी के डिस्चार्ज से जल प्रवाह बेहतर होता है और पानी में प्रदूषण का स्तर भी कम होता है। इस पूरी प्रक्रिया को महीनों पहले शुरू किया जाता है तब जाकर नदी पर आधारित इस तरह का मेगाइवेंट सफल होता है।

ग्राम पंचायत स्तर पर वर्ष 2047 को दृष्टिगत रखते हुए तैयार होंगे विजन डॉक्युमेंट

जिला पंचायत सभागृह में विजन डाक्यूमेंट 2047 के लिए ग्रामीण क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों के साथ हुआ जन संवाद कार्यक्रम

इंदौर राज्य शासन के निर्देशानुसार कलेक्टर श्री आशीष सिंह के मार्गदर्शन में वर्ष 2047 को दृष्टिगत रखते हुए जिले एवं नगर के साथ-साथ ग्राम पंचायत स्तर तक विजन डाक्युमेंट 2047 तैयार होंगे। यह विजन डाक्यूमेंट बनाने के लिए तैयारियां शुरू हो गई है। इसी सिलसिले में जन संवाद कार्यक्रमों को आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में आज जिला पंचायत में जनसंवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त संवाद कार्यक्रम में जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रीना मालवीय, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री भारत सिंह पटेल, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री सिद्धार्थ जैन सहित जिले के समस्त जनपदों के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष, प्रत्येक जनपद से 5-5 सरपंच, महिला स्व सहायता समूह सदस्य, स्वच्छाग्राही, उन्नत कृषक, युवा व समस्त जनपदों के मुख्य कार्यपालन अधिकारी तथा समस्त विभागीय जिला अधिकारी शामिल हुए।

इस जनसंवाद कार्यक्रम में मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सिद्धार्थ जैन द्वारा मध्यप्रदेश के सर्वांगीण और समावेशी विकास की दिशा में अग्रसर होने एवं वर्ष 2047 तक विकसित भारत के साथ-साथ मध्य प्रदेश को भी विकसित राज्य बनाने के उद्देश्य से विकसित मध्यप्रदेश 2047 विजन डाक्यूमेंट व इन्दौर जिले के ग्रामीण क्षेत्र को दृष्टिगत रखते हुए सम्पूर्ण कार्यशाला की रूप रेखा व अवधारणा से उपस्थित प्रतिभागियों को विस्तार से अवगत कराया गया। मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा बताया गया कि उक्त विजन डॉक्यूमेंट को तैयार करने में आम ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर जन संवाद कार्यक्रम आयोजित किये जाने के साथ-साथ जिला स्तर पर भी सम्पूर्ण सहभागिता सुनिश्चित करने हेतु समस्त हितधारकों के साथ उक्त कार्यशाला आयोजित की जा रही है। इस कार्यशाला के माध्यम से प्राप्त हुई आम ग्रामीणों की आकांक्षाओं, विचारों और प्राथमिकताओं को विजन डॉक्यूमेंट में सम्मिलित किया जाएगा। जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती मालवीय ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का सपना है कि वर्ष 2047 तक अपना देश विकसित देशों की श्रेणी में अग्रणी रूप से शामिल हो। प्रधानमंत्री जी के इस सपने को साकार करने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश तेजी से आगे बढ़ रहा है। इंदौर के ग्रामीण क्षेत्र भी इस विकास यात्रा में पीछे नहीं है। उन्होंने कहा कि गांव विकसित होगा तो प्रदेश विकसित होगा। प्रदेश विकसित होगा तो देश भी विकसित बनेगा। हम इंदौर ग्रामीण क्षेत्र में शासन की समस्त योजनाओं का क्रियान्वयन व समाज के समस्त वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री पटेल ने अपने उद्बोदन में ग्रामीण क्षेत्रों में हो रहे विकास कार्यों व विजन 2047 को ध्यान में रखते हुए इस आयोजित कार्यशाला की सार्थकता को उचित बताते हुए समाज के वंचित वर्गों के उत्थान पर जोर दिया व ग्रामीण क्षेत्रों में खेती को लाभ का व्यवसाय बनाने व कृषकों की समस्याओं को ध्यान में रखते कार्य योजना बनाने हेतु अपने सुझाव दिये। कार्यशाला में उपस्थित जिला पंचायत सदस्यों द्वारा भी विकसित ग्रामीण क्षेत्र इन्दौर को दृष्टिगत रखते हुए अपने सुझाव दिये गए। कार्यशाला में उपस्थित महिला समूह सदस्यों द्वारा भी महिला उत्थान, घरेलू हिंसा रोकथाम व महिला जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए अपने सुझाव दिये गए। कार्यशाला में उपस्थित कृषकों द्वारा उन्नत व जैविक खेती को बढाने एवं फसलों की उचित विपणन के संबंध में विस्तार से अपने सुझाव प्रस्तुत किये गए। उपस्थित युवाओं द्वारा भी भविष्य के भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका व युवाओं में बढ़ रही आपराधिक प्रवृत्ति व नशाखोरी को रोकने हेतु अपने विचार साझा किये गए। मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्री सिद्धार्थ जैन ने कार्यशाला के दौरान बताया कि इन जनसंवाद कार्यक्रमों के माध्यम से फीडबैक संकलित कर राज्य स्तर पर भेजा जाएगा। तैयार किए जा रहे विकसित मध्य प्रदेश 2047 के विजन डॉक्यूमेंट के प्रारूप को जिलों के साथ साझा किया जाएगा। इस प्रारूप के आधार पर प्रत्येक जिला मध्यप्रदेश के समग्र विजन के साथ संरेखित अपना जिला स्तरीय विजन डाक्यूमेंट तैयार कर सकेगा। यह प्रक्रिया जिलों की विशेषताओं, प्राथमिकताओं और संभावनाओं को शामिल करते हुए समग्र और समावेशी विकास सुनिश्चित करेगी।

युद्ध या आपदाओं की वजह से अनाथ हुए 14 करोड़ बच्चों को समर्पित है

नई दिल्ली। हर साल छह जनवरी को विश्व युद्ध अनाथ दिवस मनाया जाता है, यह दिन उन बच्चों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयों को स्वीकार करने का दिन है जो युद्ध में अपने माता-पिता को खो देते हैं। दुनिया भर में लाखों बच्चे संघर्ष, जलवायु परिवर्तन, विस्थापन और गरीबी के विनाशकारी प्रभावों को झेलते हैं, जिससे उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए बुनियादी अधिकारों और अवसरों से वंचित होना पड़ता है।

यूनिसेफ के मुताबिक, दुनिया के लगभग एक चौथाई बच्चे संघर्ष या आपदाग्रस्त देशों में रहते हैं। माता-पिता को खोने वाले बच्चे की दुर्दशा केवल एक दिन तक सीमित नहीं रह सकती, लेकिन जब युद्ध आम बात हो जाती है, तो उत्पीड़ितों की पीड़ा पीछे छूट जाती है। विश्व युद्ध अनाथ दिवस बच्चों को सभी प्रकार के दुर्व्यवहार से बचाने पर आधारित है। यूनिसेफ के अनुसार, अनाथ वह बच्चा है जिसकी आयु 18 वर्ष से कम है और जिसने अपने एक या दोनों माता-पिता को खो दिया है। युद्ध जैसी दुखद घटनाओं में अपने माता-पिता को खोने वाले बच्चों को अक्सर किसी जीवित परिवार के सदस्य के साथ रहना पड़ता है या उन्हें पालन-पोषण प्रणाली में जाना पड़ता है, जहां उन्हें कुपोषण और बीमारी जैसी खराब रहने की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। वे जिस भावनात्मक और मानसिक तनाव का अनुभव करते हैं, वह उन्हें बहुत परेशान करता है। विश्व युद्ध अनाथ दिवस की स्थापना फ्रांसीसी संगठन एसओएस एनफैंट्स एन डेट्रेस द्वारा की गई थी। यह दिन युद्ध से प्रभावित बच्चों के जीवन पर आधारित है और इसका लक्ष्य उनका भविष्य बेहतर बनाना है। यूनिसेफ के मुताबिक, वर्तमान में 46 करोड़ से अधिक बच्चे सूडान, यूक्रेन, म्यांमार, फिलिस्तीन जैसे देशों में संघर्ष क्षेत्रों में रह रहे हैं या वहां से भाग रहे हैं। इन बच्चों को न केवल शारीरिक खतरों का सामना करना पड़ता है, बल्कि अपने परिवारों को खोने के भावनात्मक आघात का भी सामना करना पड़ता है। यूनिसेफ की रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि 14 करोड़ से अधिक बच्चे अनाथ हैं, जिनमें से 5.2 करोड़ अफ्रीका में, एक करोड़ कैरिबियन और लैटिन अमेरिका में, 6.1 करोड़ एशिया में और 73 लाख मध्य एशिया और पूर्वी यूरोप में हैं। ज्यादातर अनाथ बच्चे अपने दादा-दादी या परिवार के किसी दूसरे सदस्य के साथ रहते हैं। यह दिन इन कमजोर बच्चों को और अधिक नुकसान से बचाने की तत्काल जरूरत पर भी प्रकाश डालता है, खासकर इसलिए क्योंकि उनमें से कई जलवायु परिवर्तन से गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों में रहते हैं। विश्व युद्ध अनाथ दिवस पर उनके जीवन को फिर से बनाने में मदद करने और यह सुनिश्चित करने के लिए वैश्विक समर्थन का आह्वान किया जाता है कि उन्हें वह देखभाल और अधिकार मिलें जिसके वे हकदार हैं। 95 प्रतिशत मामलों में सभी अनाथ बच्चे पांच साल से अधिक उम्र के होते हैं। अमीर देशों में अनाथों की संख्या कम है, लेकिन युद्ध या गंभीर बीमारियों से प्रभावित क्षेत्रों में यह संख्या बहुत अधिक है।

पृथ्वी घूर्णन दिवस- चीन का थ्री गॉर्जेस बांध धीमा कर सकता है पृथ्वी की घूमने की गति

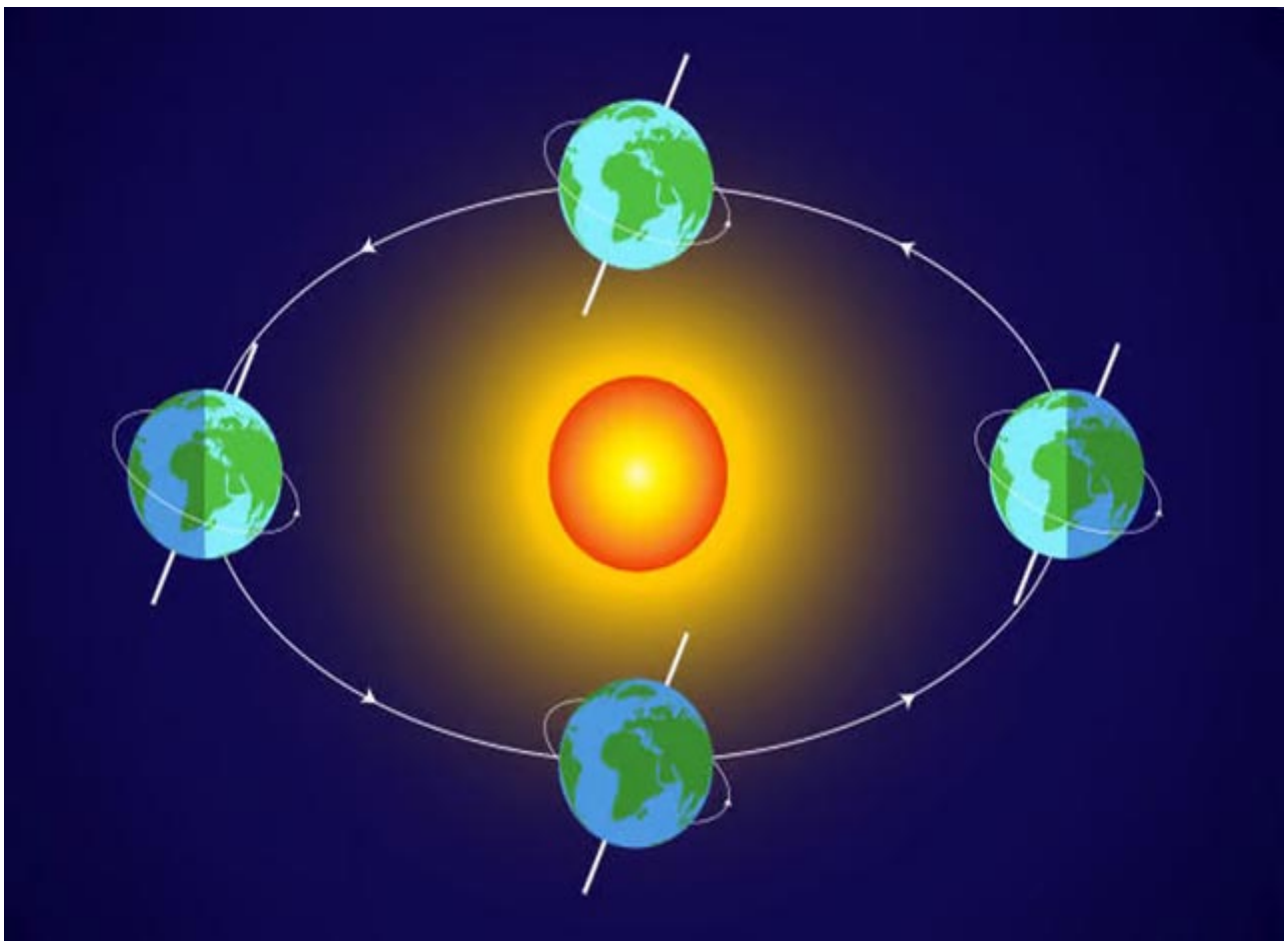

नई दिल्ली। हर साल आठ जनवरी को पृथ्वी घूर्णन दिवस या अर्थ रोटेशन डे मनाया जाता है। यह वैज्ञानिक रूप से अहम दिन है जब हमारे ग्रह के अपनी धुरी पर घूमने का जश्न मनाया जाता है। यह मौलिक घटना न केवल समय को परिभाषित करने के लिए जरूरी है बल्कि जीवन को आकार देने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पृथ्वी का घूमना एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो दिन और रात की लय को संचालित करती है, दुनिया भर में मौसम पैटर्न को प्रभावित करती है और ग्रह के चुंबकीय क्षेत्र में अहम योगदान देती है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है और एक चक्कर पूरा करने में 24 घंटे लगते हैं। पृथ्वी के घूमने की गति दिन-प्रतिदिन और साल-दर-साल थोड़ी-बहुत बदलती रहती है। तो एक सही सौर दिवस बिल्कुल 24 घंटे का नहीं होता, बल्कि इसमें कुछ सेकंड का अंतर होता है। एक औसत सौर दिवस साल भर के औसत पर आधारित होता है, लेकिन सौर दिवस की मूल अवधारणा पृथ्वी द्वारा अपनी धुरी पर एक पूर्ण चक्कर पूरा करने में लगने वाले समय है। साल 1851 में विश्व मेले में, फ्रांसीसी भौतिक विज्ञानी लियोन फौकॉल्ट ने पेरिस में पैंथियन के शीर्ष से सीसे से भरी पीतल की गेंद को लटकाकर दिखाया कि पृथ्वी कैसे घूमती है। यह उपकरण, जिसे अब फौकॉल्ट पेंडुलम के रूप में जाना जाता है, ने दिखाया कि पेंडुलम के झूलने का तल पृथ्वी के अपने घूर्णन के सापेक्ष घूमेगी। जब फौकॉल्ट पेंडुलम एक दिशा में झूलना शुरू करता है, तो कुछ घंटों के बाद दिशा बदल जाती है। हालांकि ऐसा लगता है कि फर्श यंत्र का स्थिर हिस्सा है और बदलाव पेंडुलम के झूलने के तरीके से होता है, वास्तव में, परिवर्तन यह तथ्य है कि पैरों के नीचे की धरती धीरे-धीरे घूम रही है जबकि पेंडुलम वहीं रहता है। फौकॉल्ट पेंडुलम की कई स्थापनाओं में केंद्र के चारों ओर व्यवस्थित खूंटियों की एक श्रृंखला भी शामिल है, जो समय बीतने का इशारा देती है। यदि कोई उत्तरी ध्रुव या दक्षिणी ध्रुव पर स्थित होता, तो श्रृंखला को पूरा होने में लगभग 24 घंटे लगते, लेकिन जैसे-जैसे स्थापनाएं दुनिया भर में स्थानांतरित होती जाती हैं, समय में थोड़ा बदलाव हो जाता है। फौकॉल्ट पेंडुलम अब दुनिया भर के विज्ञान संग्रहालयों में पाए जाते हैं और वे सौर विज्ञान को समझने और सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं। जबकि आइजैक न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की खोज की, उन्होंने वास्तव में इसके पीछे के कारण की व्याख्या नहीं की, केवल इतना कहा कि यह एक बल के रूप में मौजूद है और इसलिए इस वैज्ञानिक ज्ञान का विस्तार फौकॉल्ट के माध्यम से हुआ। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, जो उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों से होकर गुजरने वाली एक काल्पनिक रेखा है। भूमध्य रेखा पर लगभग 1,670 किमी प्रति घंटे की गति से घूमती है। पृथ्वी को एक पूर्ण चक्कर पूरा करने में लगभग 24 घंटे लगते हैं, जो एक दिन की लंबाई को परिभाषित करता है। इस चक्कर के कारण सूर्य, चंद्रमा और तारे आकाश में घूमते हुए दिखाई देते हैं, यह एक ऐसा भ्रम है जिसने सहस्त्राब्दियों से मानवीय धारणाओं को आकार दिया है। यह चक्कर कोरिओलिस प्रभाव को भी प्रेरित करता है, जो हवा और समुद्री धाराओं को प्रभावित करता है, जो बदले में दुनिया भर में जलवायु और मौसम के पैटर्न को नियंत्रित करते हैं।

पृथ्वी घूर्णन दिवस हमारे ग्रह की गति के पीछे के विज्ञान को जानने का एक अवसर है। इससे पता चलता है कि कैसे मूलभूत प्रक्रियाएं, पर्यावरण, समय-निर्धारण और यहां तक कि ब्रह्मांड में हमारे स्थान को आकार देती हैं। नासा की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन के थ्री गॉर्जेस बांध के निर्माण और संचालन के कारण पृथ्वी के घूर्णन में बदलाव हुआ। इसने इसे 0.06 माइक्रोसेकंड तक धीमा कर दिया। इस घटना की स्पष्ट सूक्ष्मता इस बात का परिणाम है कि विशाल बांध का जल भंडार पृथ्वी के द्रव्यमान को कैसे पुनर्वितरित करता है, जो पृथ्वी की घूर्णन गति पर सूक्ष्म रूप से कार्य करता है।

रिपोर्ट के मुताबिक, पृथ्वी की प्रणाली के भीतर द्रव्यमान का पुनर्वितरण पृथ्वी के घूर्णन पर प्रभाव पैदा करेगा। जैसे-जैसे थ्री गॉर्जेस डैम की सीमाओं के भीतर पानी जमा होता है, यह अपने द्रव्यमान को पुनर्वितरित करेगा और इस प्रकार पृथ्वी की सतह पर द्रव्यमान वितरण को एक समान पैटर्न से बदल देगा। बाद में घूर्णी गतिशीलता के कारण पृथ्वी के लिए जड़त्व आघूर्ण को थोड़ी मात्रा में बदलने का अनुमान है, एक शब्द जो घूर्णन की धुरी के संबंध में द्रव्यमान के वितरण का वर्णन करता है। नासा के बेंजामिन फोंग चाओ के अनुसार, द्रव्यमान का यह पुनर्वितरण, हालांकि इसका परिणाम बहुत ही कम प्रभाव (एक दिन में 0.06 माइक्रोसेकंड की देरी) होता है, पृथ्वी की घूर्णन गति को बदलने के लिए पर्याप्त है।

स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी की गई एडवाइजरी

इंदौर (नगर प्रतिनिधि)शीत लहर से बचाव के लिए स्वास्थ्य विभाग द्वारा एडवाइजरी जारी की गई है। जारी एडवाइजरी में नागरिको से आग्रह किया गया है कि वे सर्दी को देखते हुए विशेष सावधानी बरते। गर्म कपड़े पहने, जैसे फ्लू, सर्दी, खांसी एवं जुकाम आदि के लक्षण हो जाने पर चिकित्सक से संपर्क करें।

प्रभारी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जी.एल. सोढ़ी ने बताया कि सर्दी के मौसम में जब ठंडी हवाएं तेजी से चलने लगती है, तापमान में तेजी से गिरावट होने लगती है, तब इस स्थिति को शीत लहर कहते है, आसान शब्दों में कहा जा सकता है कि सर्दी के मौसम में न्यूनतम तापमान 10 डिग्री सेल्सियस से लेकर 04-05 डिग्री नीचे चला जाता है तो इसे शीत लहर कहा जाता है। स्थानीय मौसम पूर्वानुमान के लिए रेडियो, टी.वी. एवं समाचार पत्र जैसे सभी मीडिया द्वारा दी जा रही जानकारी का अनुसरण करें। पर्याप्त मात्रा में गर्म कपड़े पहने। नियमित रूप से गर्म पेय पीते रहे। हवा निकासी का प्रबंध करें, शीत लहर में अधिक ठंड के लम्बे समय तक सम्पर्क में रहने से त्वचा कठोर एवं सुन्न कर सकती है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर(म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008